जगन्नाथ मंदरि अधनियिम, 1954

हाल ही में एक ऐतिहासकि नरि्णय में ओडशिा राज्य मंत्रमिंडल ने वर्ष 1954 के श्री जगन्नाथ मंदरि अधनियिम में संशोधन को मंज़ूरी दे दी है।

प्रमुख बदि्

- **परचिय:**
  - वर्ष 1806 में तत्कालीन ब्रटिशि सरकार ने जगन्नाथ मंदरि के प्रबंधन के लयि नयिम जारी कयि थे, जसिे औपनविशकि शासकों द्वारा **जगरनॉट टेंपल** कहा जाता था।
    - इन नयिमों के तहत, मंदरि में आने वाले तीर्थयात्रयिों से करों का भुगतान करने की अपेक्षा की जाती थी।
    - ब्रटिशि सरकार को मंदरि में वरषि्ठ पुजारयिों की नयिुक्त का काम सौंपा गया था।
  - मंदरि के प्रबंधन की शक्तयिाँ तीन वर्ष बाद **खोरधा के राजा** को सौंप दी गईं थी जबक औपनविशकि सरकार ने इस पर अपना नयिंत्रण बनाए रखा था।
  - भारत को स्वतंत्रता मलिने के बाद **जगन्नाथ मंदरि अधनियिम, 1952** पेश कयिा गया जो वर्ष 1954 में लागू हुआ।
    - इस अधनियिम में मंदरि के भूमि अधकिार, पुजारयिों के कर्त्तव्य, श्री जगन्नाथ मंदरि प्रबंधन समति की प्रशासनकि शक्तयिों के अधकिार, पुरी के राजा और मंदरि के प्रबंधन व प्रशासन से जुड़े अन्य व्यक्तयिों के वशिषाधकिार शामलि हैं।
- **हालयिा संशोधन:**
  - जगन्नाथ मंदरि के नाम पर ज़मीन बेचने और पट्टे पर देने की शक्त अब मंदरि प्रशासन तथा संबंधति अधकिारयिों को सौंपी जाएगी।
  - पहले के वपिरीत, इस प्रक्रयिा हेतु राज्य सरकार से कसिी अनुमोदन की आवश्यकता नहीं होगी।
    - अधनियिम की धारा 16 (2) में कहा गया है क मंदरि समति के कब्ज़े वाली कोई भी अचल संपत्त राज्य सरकार की पूर्व मंज़ूरी के बनिा पट्टे पर, गरिवी, बेची या अन्यथा हस्तांतरति नहीं की जाएगी।

जगन्नाथ मंदरि:

- ऐसी मान्यता है क इस मंदरि का **नरि्माण 12वीं शताब्दी में पूर्वी गंग राजवंश** (Eastern Ganga Dynasty) के **राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव द्वारा** कयिा गया था।
- जगन्नाथ पुरी मंदरि को **'यमनकि तीर्थ'** भी कहा जाता है, जहाँ हदिू मान्यताओं के अनुसार, पुरी में भगवान जगन्नाथ की उपस्थति के कारण मृत्यु के देवता **'यम' की शक्त** समाप्त हो गई है।
- इस मंदरि को **"सफेद पैगोडा"** कहा जाता था और यह **चारधाम तीर्थयात्रा** (बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम) का एक हस्सिा है।
- मंदरि के **चार (पूर्व में 'सहि द्वार', दक्षणि में 'अश्व द्वार', पश्चमि में 'व्याघरा द्वार' और उत्तर में 'हस्त द्वार') मुख्य द्वार** हैं। प्रत्येक द्वार पर नक्काशी की गई है।
- इसके प्रवेश द्वार के सामने अरुण स्तंभ या सूर्य स्तंभ स्थति है, जो मूल रूप से **कोणार्क के सूर्य मंदरि** में स्थापति था।

//

- ओडिशा स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारक:
  - कोणार्क सूर्य मंदिर (यूनेस्को विश्व विरासत स्थल)
  - तारा तारिणी मंदिर
  - लिंगराज मंदिर
  - उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएँ

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/jagannath-temple-act-1954